



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

जहाँ आशादिगि णव,
जाडअंधो दुःखटिया।
इच्छई पारगागंतु,
अंतयते विखीचई।।
जन्मान्ध मनुष्य सच्छिद्र नौका
में बैठकर समुद्र का पार पाना
चाहता है, पर वह उसका पार
नहीं पाता, बीच में ही डूब
जाता है।

नई दिल्ली

● वर्ष 25 ● अंक 13 ● 1-7 जनवरी, 2024



प्रत्येक सोमवार

● प्रकाशन तिथि : 30-12-2023 ● पेज : 12

₹10 रुपये

मायानगरी मुंबई के उपनगर हो रहे ज्योतिचरण से पावन

व्यक्ति के आचरण में हो धर्म का समावेश : आचार्यश्री महाश्रमण

कुर्ला ईस्ट, नेहरू नगर,
२६ दिसंबर, २०२३

अणुव्रत यात्रा प्रणेता आज प्रातः कुर्ला ईस्ट से नेहरू नगर पधारे। संयम के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आर्ष वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में अनंत-अनंत आत्माएँ हैं। उनको चार विभागों में बाँटा जा सकता है—परमात्मा, महात्मा, सदात्मा और दुरात्मा।

परमात्माएँ—जो मोक्ष में विराजमान सिद्ध भगवान हैं, वे परमपद को प्राप्त हो गए हैं। अन्य आत्माएँ तो संसारी अवस्था से युक्त हैं। मनुष्य तीन प्रकार के हो सकते हैं। जो संत लोग हैं, गृह त्यागी हैं साधना में लगे हुए हैं, कंचन-कामिनी के परित्यागी होते हैं, वे महात्मा होते हैं। जिनके मन, वचन और काय के आचरणों में एकरूपता है, वो महात्मा होते हैं। सारे मनुष्य तो महात्मा बन नहीं सकते।

जो गृहस्थ हैं, वो दो प्रकार के हो जाते हैं—सदात्मा और दुरात्मा। जो सज्जन लोग हैं, भले आदमी हैं, प्रामाणिक हैं, दया भाव रखने वाले गृहस्थ सदात्मा हैं। जो बुरी आत्मा वाले लोग हैं, जो धोखा देने वाले, चोरी-झूठ में ज्यादा रचे-पचे रहते हैं, हिंसा कर देते हैं, नशे में भी



लिप्त हो जाते हैं, ऐसे दुराचरण करने वाली आत्मा दुरात्मा होती है।

अगर कोई किसी के गले का छेदन कर दे वो शत्रु इतना बड़ा अहित नहीं करता है, जितना अहित जो आत्मा दुरात्मा बनी है, वह करती है। दुरात्मा जन्म-जन्मांतर तक संसार में भटकती हुई दुःख भोगती है। जब मृत्यु निकट आती है, तब वह आत्मा सोचती है कि मैंने कितने कूर काम

किए अब मुझे नरक में जाना पड़ेगा। नरक में कितने दुःख भुगतने पड़ते हैं, ऐसा पश्चाताप होता है।

गृहस्थों के लिए धातव्य है कि महात्मा तो नहीं बन सकते, पर दुरात्मा तो न बनें। सदात्मा बने रहें, सज्जन बने रहें। छोटे-छोटे संकल्प आदमी के जीवन में आएँ। हिंसा-अप्रामाणिकता और चोरी से दूर रहें। अणुव्रत के छोटे नियम से

आदमी की आत्मा दुरात्मा बनने से बच सकती है। किसी के साथ असद्-छल-कपट न करें। दूसरों के अधिकार को छीनने का प्रयास न करें।

यह मानव जीवन हमें मिला हुआ है, इसका सदुपयोग करें। सन्मार्ग पर चलने का प्रयास करें। धर्म के दो प्रकार हो जाते हैं—उपासनात्मक धर्म और आचरणात्मक धर्म। दोनों धर्म जीवन में रहे। अपने

आचरणों में भी धर्म को रखें। हम गुणों को देखें, अवगुणों को न देखें। कमजोरी को भी कमजोर करने का प्रयास करना चाहिए। हमारी आत्मा ही हमें सुख-दुःख देने वाली है। गृहस्थ सज्जन बने रहें, सदात्मा बनें। दुरात्मा होने से बचें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि हमें सदात्मा बनने के लिए पुरुषार्थ करना होगा। गुरु तो हमें दर्पण दे देते हैं, मुखड़ा हमें स्वयं को ही देखना पड़ेगा। गुरु मार्गदर्शन देकर उस पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं, पर पुरुषार्थ हमें स्वयं करना होता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्वामी विवेकानंद स्कूल की प्रिंसिपल गीता सिंह ने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल एवं तेयुप ने गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला एवं तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा प्रस्तुति दी गई। स्थानीय विधायक मंगेश कुडालगर, स्थानकवासी समाज की ओर से ऋषभ सांखला, मूर्तिपूजक समाज की ओर से डॉ० मुकेश बोहरा, मीना साबत्रा, प्रेक्षाध्यान की संभागी बहनों ने गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव बालासाहेब ठाकरे ने किए पूज्यप्रवर के दर्शन

अपनी आत्मा को जीतने की हो साधना : आचार्यश्री महाश्रमण



कुर्ला वेस्ट, २५ दिसंबर, २०२३

कुर्ला वेस्ट प्रवास के दूसरे दिन शांतिदूत महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जय और पराजय दुनिया में यदा-कदा हो जाती है। चुनाव, न्यायालय या खेल में यह चलती है। अध्यात्म जगत में भी एक बात बताई गई है कि युद्ध होता है तब कोई जीत जाता है, कोई हार जाता है।

समरांगण में जो शत्रु के दस लाख योद्धाओं को जीत लेता है, वह बड़ी जीत है, पर परम जीत नहीं है। एक आदमी दस लाख योद्धाओं को न जीतकर अपनी आत्मा को जीतता है। शास्त्रकार का कथन है कि यह उसकी परम विजय है। आत्मा को जीतना है, तो प्रश्न होता है कि आत्मा दीखती है क्या? जो दिखाई न दे उसे कैसे जीतकर परास्त किया जाए।

आत्मा तो नहीं दिखाई देती पर शरीर, वाणी और मन का तो हमें अनुभव होता है। पाँच इंद्रियाँ भी हमारे सामने हैं। अगर हम शरीर, वाणी और मन को जीत लें, इंद्रियों को वश में कर लें तो इन चारों को जीतने का निष्कर्ष आएगा—आत्मा को जीत लेना।

जो साधना के द्वारा अपने को साधकर सिद्ध साधक सा बन जाता है। वीतराग और क्षीण मोह बन जाता है, वह आत्म विजेता व्यक्ति बन जाता है, यह मोक्ष का मार्ग है। एक मोह का मार्ग है, तो दूसरा मोक्ष का मार्ग है। मोह का मार्ग लेने वाला मोक्ष मार्ग से दूर हो जाता है। मोह है तो मोक्ष नहीं, मोक्ष है तो मोह नहीं। अपने आपको जीतना अध्यात्म युद्ध की बात हो जाती है। (शेष पृष्ठ २ पर)



कालबादेवी क्षेत्र के व्यापारिक समूहों ने प्राप्त किया ईमानदारी का पाथेय

न्याय से उपार्जित धन होता है निर्मल : आचार्यश्री महाश्रमण

कालबादेवी, २० दिसंबर, २०२३

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कालबादेवी में मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में शांति का बड़ा महत्त्व है। चित्त में शांति रहे। दो चीजें हैं, सुविधा और शांति। सुविधा बाह्य-भौतिक रूप में अनुकूलता होती है, जिसका संबंध शरीर के साथ है। शांति का संबंध मन के साथ है।

कई बार बाहर से अनेक सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं, पर आदमी के मन में अशांति रहती है। अशांति भी अनेक संदर्भों में हो सकती है। मन में जो सहज सुख है या निमित्तों से प्राप्त है, वह शांति है। बाह्य संसाधनों से प्राप्त शांति अस्थायी है।

राग-द्वेष की मुक्ति और समता भाव से भीतर में जो शांति निखरती है, वह शांति सही शांति हो सकती है। भीतरी शांति के कुछ बाधक तत्व भी हैं। ज्यादा गुस्सा आने से भय लगने से, मन में चिंता होने से, लोभ की भावना से, इच्छित वस्तु न मिलने से भीतरी अशांति हो सकती है। ये सब न हो तो आदमी भीतरी शांति में



रह सकता है।

व्यापार करने से जनता की आवश्यक सामग्री की पूर्ति और आर्थिक उपार्जन हो सकता है। दोनों का परस्पर विनिमय होता है। व्यापारी और ग्राहक संबंध है, दोनों के मन में नैतिकता रहे। एक-दूसरे का शोषण न हो। दो शब्द हैं—अर्थ और अर्थाभास। न्याय से उपार्जित पैसा अर्थ है। अनैतिकता से

जो अर्थ संग्रहित होता है, वह अर्थाभास है। नैतिकता का मनोभाव बना रहे। लालच-ठगी से व्यापार में अशुद्धि आ सकती है।

सामायिक, माला, जप-तप धर्म है।

अणुव्रत से आचरणों में धर्म आता है। नैतिकता, ईमानदारी अणुव्रत के ही अंग हैं। संयम का संकल्प हो तो सीमित संसाधनों से भी काम चल सकता है। जैन शास्त्रों में दिव्य आत्माएँ देव-देवियों

भी हैं। सांसारिक रीति-रिवाज में पूजा होती है। पर शास्त्रों में कहा गया है कि जिसके मन में धर्म होता है, उनको देवता भी नमस्कार करते हैं।

दुकानदारी में ईमानदारी-ईमानदार दुकानदार रहे। जहाँ ईमानदारी रहती है, वहाँ लक्ष्मी का वास रहता है। लक्ष्मी जाए तो जाए पर सत्य देवता को न जाने दें। सच्चाई पैसे से भी ऊँची चीज है। व्यापार में ईमानदारी से निर्मलता रह सकती है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अनेक व्यापारियों ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पुलिस कमीशनर (एडिशनल) डॉ० अभिनव देशमुख, पृथ्वीराज कोठारी (प्रेसीडेंट इंडिया बुलीयन एसोसिएशन), लायंस क्लब से प्रदीप कापड़िया, किशोर मंडल, कन्या मंडल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अपने कर्तव्य के प्रति रहें जागरूक : आचार्यश्री महाश्रमण

कालबादेवी, २१ दिसंबर, २०२३

महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के पंच दिवसीय प्रवास में विशिष्ट कृपा करते हुए पूज्यप्रवर ने स्कूल के प्रथम तल पर पधारकर आचार्य तुलसी सभागृह को पावन किया।

तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु कैसा होता है? संयत, विरत, प्रतिहत होता है। आज जितनी भारत की जनसंख्या है, उससे ज्यादा पूरी सृष्टि में संख्या साधु समुदाय की है। चारित्रात्माओं की संख्या हमेशा कम से कम २००० करोड़ से कुछ अधिक रहेगी और ज्यादा से ज्यादा संख्या ६००० करोड़ से कुछ अधिक रहेगी।

वैसे १५ कर्मभूमियों में साधु होते हैं। केवली समुद्घात की अपेक्षा से पूरे लोक में उनकी आत्मा फैल जाती है। नमस्कार महामंत्र में भी बताया गया है—गमो लोए सव्य साहूणं। लोक के सब साधुओं को नमस्कार।

हमारे जीवन में कर्तव्य-बोध का बड़ा महत्त्व होता है। जिसका जो कर्तव्य है, उसके प्रति जागरूक रहना एक अच्छी बात हो जाती है। कर्तव्य के प्रति जो प्रमादी-आलसी है, उसमें कुछ कमी है। साधु का अपना कर्तव्य होता है। साधु का पहला कर्तव्य है अपनी साधुता की सुरक्षा करना। उसके बाद प्रवचन, धर्म की प्रेरणा, यात्रा कर जनोद्धार करने का प्रयास करना।

महाप्रज्ञ स्कूल में आचार्य तुलसी सभागृह है। गुरुदेव तुलसी फरमाया करते थे कि महाप्रज्ञ में तुलसी को देखो। तुलसी में महाप्रज्ञ को देखो। दोनों में अभिन्नता थी। तेरापंथ के आचार्यों में गुरुदेव तुलसी पहले आचार्य थे जो मुंबई व दक्षिण यात्रा

में पधारे थे। बहुत धर्म प्रचार किया था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी भी पधारे थे। यह भी एक कर्तव्य है। संभाल होती रहे। यात्रा करने से उन्मेष आ सकता है।

जब तक शरीर की अनुकूलता है, तब तक धर्म की आराधना कर लेनी चाहिए, बाद का पता नहीं है। भगवान ऋषभ ने लोगों को लौकिक प्रशिक्षण दिया था। यह जानते हुए कि यह सावद्य कार्य है, पर कर्तव्य को निभाने, लौकिक अनुकंपा की थी। लौकोत्तर कर्तव्य भी होता है। हम अपने जीवन में कर्तव्य बोध रखें, कर्तव्य के प्रति जागरूक रहें। कर्तव्य के प्रति प्रमाद न हो, यह काम्य है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अपनी आत्मा को जीतने की हो...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साधु का जीवन तो साधनामय होना ही चाहिए। गृहस्थावस्था में जितना आत्म-विजय की ओर आगे बढ़ा जा सके उतना प्रयास होना चाहिए। गृहस्थ जीवन में भी साधु जैसा जीवन हो। ५० वर्ष उम्र आने के बाद रोज एक सामायिक करने का प्रयास करना चाहिए। धीरे-धीरे और साधना का प्रयास करें, कषाय-मुक्त रहने का प्रयास करें। बारह व्रत अच्छी साधना है, सुमंगल साधना और उत्कृष्ट साधना है। परिग्रह का सीमाकरण करें और जीवन में सादगी को स्थान दें।

वर्तमान में मनुष्य जन्म प्राप्त है, इसका साधना में उपयोग हो। आसक्ति ज्यादा न रहे। अपद रहकर निरवद्य सेवा करें। उम्र बढ़ने के साथ जीवन में निवृत्ति रहें। परिवार वाले भी धार्मिक सहयोग देने का प्रयास करें। परिणाम शुद्ध रहे। निरवद्य योगों में रहकर स्वाध्याय अधिक करें। आत्मा के आसपास रहने का प्रयास करें। हम आत्मा को जीतने की साधना करें।

बहिर्विहारी अनेक साध्वियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी, सहयोगी साध्वियों ने गीत से, साध्वी पावनप्रभा जी, साध्वी पुण्ययशा जी एवं सहवर्ती साध्वियों ने गीत से पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में भावना डागलिया, तेयुप अध्यक्ष जीतू कोठारी, विदिशा डागलिया, दिनेश सुतरिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। सर्वम पटेल ने Sand Art की प्रस्तुति दी। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

♦ अज्ञान ऐसा अभिशाप है जो क्रोध, लोभ आदि से भी ज्यादा खतरनाक है।

♦ जीवन में जब पाप का उदय होता है तो प्रतिकूलता प्राप्त होती है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

शाहदरा, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में तेरापंथी सभा, शाहदरा के तत्वावधान में कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला एवं कार्यकर्ता सम्मान समारोह आयोजित हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने 'सफल कार्यकर्ता कौन?' इस विषय पर कहा कि किसी भी सभा-संस्था को संचालित करने एवं उसे शिखर तक पहुँचाने का काम कार्यकर्ताओं का होता है। कार्यकर्ता हजारों हो सकते हैं, किंतु सफल कार्यकर्ता वो होता है, जो समय का नियोजन सम्यक् ढंग से करता है, अपने कीमती समय का उपयोग संस्था-विकास के लिए करता है, जो स्वार्थ को छोड़कर पर के लिए खपता है, तपता है एवं पसीना बहाता है, जो मधुरभाषी, मितभाषी, मृदुभाषी होता है, मधुर वाणी के द्वारा दूसरों के दिल को जीत सकता है। मृदुभाषी सबका सम्मान प्राप्त करता है। अपेक्षा है हर सभा-संस्था के कार्यकर्ता इन गुणों से संपन्न बनकर अपने संगठन को अगणित ऊँचाइयाँ प्रदान करें।

साध्वीश्री जी ने कहा कि सभा द्वारा कार्यकर्ताओं का सम्मान किया जा रहा है। कार्यकर्ताओं ने अपने समय का योग दिया है। उनका मूल्यांकन सभा द्वारा हुआ है। लेकिन सम्मान प्राप्त हर कार्यकर्ता का दायित्व बढ़ गया है। साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा कि सफल कार्यकर्ता वह होता है जो मननशील, चिंतनशील, श्रमशील, सहनशील एवं चरित्रशील हो। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच संचालन करते हुए कार्यकर्ता के गुणों का सुंदर चित्रण किया। साध्वी समत्वयशा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने विचार रखे।

सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा एवं कटक से समागत निहारिका सिंधी ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर सभा द्वारा अनेक चातुर्मासिक सहयोगियों एवं अनेकों कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया।

जीवन निर्माण में सत्संग का महत्वपूर्ण योगदान

चंडीगढ़।

मनुष्य के चरित्र निर्माण में संगति का बहुत प्रभाव पड़ता है। हमारे शास्त्रों में सत्संगति को बहुत महत्व दिया गया है। सत्संगति का अर्थ सच्चरित व्यक्तियों के संपर्क में रहना, सच्चरित व्यक्तियों की संगति से साधारण व्यक्ति भी महत्वपूर्ण बन जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही जन्म लेता है और अंत तक रहता है। अपने परिवार, संबंधियों और आस-पड़ोस वालों और अपने कार्यस्थल में वह कई प्रकार के स्वभाव वाले व्यक्तियों के संपर्क में आता है। निरंतर संपर्क के कारण एक-दूसरे का प्रभाव एक-दूसरे के विचारों और व्यवहार पर पड़ते रहना स्वाभाविक है। यह शब्द मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि बुरे व्यक्तियों के संपर्क में हम पर बुरे संस्कार पड़ते हैं और अच्छे लोगों के संपर्क में आकर हममें गुणों का समावेश होता चला जाता है। धीरे-धीरे आयु बढ़ने के साथ मनुष्य जीवन का अर्थ समझने का प्रयास करता है और उसकी संगति के अनुसार ही जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण बनता है। सत्संगति मनुष्य को उच्च विचारों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है और उसके चरित्र बल को बढ़ाती है।

नया साल न्यू कनेक्शन

चेन्नई।

नए साल को सही मायने में कई नए रेजोल्यूशन्स के साथ स्वागत करते हुए टीपीएफ, चेन्नई चेप्टर अध्यक्ष प्रसन्न बोथरा ने स्वागत स्वर एवं टीपीएफ की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की। टीपीएफ, चेन्नई के वरिष्ठ सदस्य गौतम बोहरा ने अपने स्वरचित कविताओं के पिटारे से कविताओं का वाचन कर आगंतुकों का मनोरंजन किया।

टीपीएफ के कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य नेटवर्किंग एवं नए टीपीएफ प्रोफेशनल्स से मेल-मिलाप बढ़ाना था। कार्यक्रम को सफल बनाने में टीपीएफ हुनर नेशनल कन्वीनर अनिल लुणावत एवं कैरियर काउंसलिंग कन्वीनर कमल बोहरा के साथ टीपीएफ अध्यक्ष प्रसन्न बोथरा, मंत्री सुधीर आंचलिया एवं उनकी पूरी टीम के श्रम ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

टीपीएफ, चेन्नई चेप्टर के सभी पूर्वाध्यक्षों ने इस नई टीम के श्रम को सराहा। कार्यक्रम का संचालन कमल बोहरा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अनिल लुणावत ने किया।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि



नामकरण संस्कार

सूरत।

गंगाशहर निवासी, सूरत प्रवासी हेमेंद्र पुगलिया के सुपुत्र संस्कारक निशांत-ऋषिका पुगलिया की कन्या का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक विनीत सामसुखा, नरेंद्र भंसाली, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप, सूरत की ओर से नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

विजयनगर।

लाडनू निवासी, बैंगलोर प्रवासी अंकित एवं दिलखुश डूंगरवाल की सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक भंवरलाल मांडोत एवं विकास बांढिया ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप द्वारा डूंगरवाल परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया गया।

बड़ौदा।

रक्षा-हितेश महनोत के सुपुत्र का नामकरण संस्कार संस्कारक दीपक श्रीमाल ने पूरे विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम संपादित करवाया।

तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष पंकज बोल्या एवं तेयुप मंत्री सुमित कोठारी ने तेयुप बड़ौदा द्वारा बधाई संदेश का वाचन व आभार ज्ञापन किया गया। तेयुप, बड़ौदा द्वारा परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

लाडनू निवासी, सूरत प्रवासी संजय कुमार नाहटा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, गौतमचंद वेदमूथा ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

उपस्थित पारिवारिकजनों ने संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

सूरत।

चाड़वास निवासी, सूरत प्रवासी प्रवीण बच्छावत का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़ एवं धर्मचंद सामसुखा ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

उपस्थित पारिवारिकजनों ने संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

अहमदाबाद।

संतोषदेवी अनिल जैन का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक नानालाल कोठारी एवं वैभव कोठारी ने मंगल मंत्रोच्चार का संगान कर संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में कार्यकारिणी सदस्य संयम चोरड़िया एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

नवीन प्रतिष्ठान शुभारंभ

बैंगलुरु।

चांदारुण निवासी, बैंगलुरु प्रवासी सुरेशचंद रोहित कोठारी के नवीन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अमित भंडारी ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। रोहित कोठारी ने तेयुप का धन्यवाद ज्ञापित किया। तेयुप अध्यक्ष रजत बैद एवं कोषाध्यक्ष तरुण पटावरी एवं संस्कारक ने परिजनों को मंगलभावना पत्रक एवं बधाई पत्र भेंट किया।

पाणिग्रहण संस्कार

अहमदाबाद।

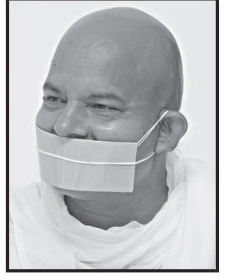
प्रिया सुपुत्री प्रताप सिंह बोथरा सुपौत्री स्व० मांगीलाल बोथरा (सुजानगढ़-बैंगलोर) का शुभ विवाह अभिषेक सुपुत्र निर्मल सिंह कोठारी, सुपौत्र स्व० गणेशमल कोठारी (लाडनू-अहमदाबाद) के साथ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक डालिमचंद नवलखा एवं बाबूलाल चोपड़ा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

परिषद की ओर से कोठारी एवं बोथरा परिवार को मंगलभावना यंत्र एवं पत्रक भेंट दिया गया। वर-वधू परिवार की तरफ से मानक बाई ने परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

उपासना

(भाग - एक)

प्रस्तुति



दस धर्म

मृदुता धर्म के प्रासाद में प्रवेश पाने का एक द्वार है। पहले द्वार और फिर प्रासाद। द्वार में प्रवेश बिना कोई प्रासाद तक पहुँच नहीं सकता। क्या मृदु बने बिना कोई धार्मिक हो सकता है? आदमी धार्मिक तो है किंतु मृदु नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि दिन तो है पर प्रकाश नहीं है। प्रकाश के बिना दिन का अस्तित्व मान्य नहीं है। फिर मृदुता के बिना धर्म का अस्तित्व कैसे मान्य होगा? धार्मिक जगत् ने मृदुता को मान्यता दी है पर उसका अर्थ-बोध बहुत संकुचित है। मृदुता का अर्थ समझा जा रहा है विनम्रता। यह समझ त्रुटिपूर्ण नहीं है, किंतु अपूर्ण है। मृदुता का पूर्ण अर्थ है कठोरता का विसर्जन, क्रूरता का विसर्जन। मृदु वह हो सकता है जिसके हृदय में करुणा का अजस्र स्रोत प्रवाहित है। जिसके हृदय में करुणा का अजस्र स्रोत प्रवाहित होता है, वह शोषण नहीं कर सकता, अपनी सुख-सुविधा में दूसरों की सुख-सुविधा को विलीन नहीं कर सकता, दूसरों को हानि पहुँचे, वैसा कार्य नहीं कर सकता।

सिंह चलता है, तब मुड़कर पीछे देखता है। क्या धार्मिक के लिए पीछे देखना आवश्यक नहीं है? सिंहावलोकन किए बिना अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित नहीं किया जा सकता। आत्मालोचन किए बिना धर्म पर आने वाले आवरण को तोड़ा नहीं जा सकता। अहंभाव व्यक्ति को क्रूर बनाता है। क्रूरता प्रतिहिंसा को जन्म देती है। एक बार गौतम ने भगवान् महावीर से पूछा—‘भते! मृदुता से क्या प्राप्त होता है?’

भगवान् ने कहा—‘गौतम! मृदुता से अपने आपको दूसरों से अतिरिक्त मानने की भावना मर जाती है।’

इस दुनिया में कोई भी आदमी भगवान् के घर से नहीं आया है। हम सब मनुष्य हैं। इसलिए हर मनुष्य दूसरे मनुष्य से मानवीय व्यवहार की अपेक्षा रखता है।

लाघव

एक आदमी तालाब में स्नान कर रहा था। उसने गहरी डुबकियाँ लीं। घंटा भर तक जल में तैरता-डूबता रहा। आखिर बाहर आया। घर जाते समय जल का घड़ा भर लिया। घड़ा कंधे पर रख वह चलने लगा। घर कुछ दूर था। मार्ग में वह थक गया। उसने मन-ही-मन सोचा—तालाब में डुबकी ली तब सैकड़ों टन पानी मेरे सिर पर था। पर मुझे कोई भार का अनुभव नहीं हुआ। घड़े में दस-बारह किलो पानी होगा, फिर भी मुझे भार का अनुभव हो रहा है। यह क्यों? ऐसा प्रश्न उन सबके मन में पैदा होता है, जो व्यापार और सीमित-दोनों क्षेत्रों का अवगाहन करते हैं।

तालाब में जल मुक्त होता है, उसका अवगाह-क्षेत्र व्यापक होता है, इसलिए भार का दबाव विकेंद्रित हो जाता है। घड़े में जल बंधा होता है, उसका अवगाह क्षेत्र सीमित होता है। इसलिए भार का दबाव केंद्रित हो जाता है। जब धन का संग्रह सीमित क्षेत्र में होता है, तब वातावरण में दबाव, तनाव और भार की अनुभूति होती है। जब धन का अवगाह-क्षेत्र व्यापक हो जाता है, तब वातावरण दबाव, तनाव और भार की अनुभूति से शून्य हो जाता है। इसीलिए भगवान् महावीर ने कहा था, ‘ऋद्धि गौरव—धन को अपना मानने से आदमी बोझिल बनता है और ऋद्धि-लाघव से वह हल्का बनता है।’

जब खाद्य-सामग्री केंद्रित हो जाती है, कुछेक लोगों के हाथों में जमा हो जाती है, तब वातावरण में दबाव, तनाव और भार की अनुभूति होती है। जब खाद्य सामग्री विकेंद्रित हो जाती है, सबके हाथों में पहुँच जाती है, तब वातावरण दबाव, तनाव और भार की अनुभूति से शून्य हो जाता है। इसीलिए भगवान् महावीर ने कहा था, ‘रस-गौरव—खाद्य को अपना मानने से आदमी बोझिल बनता है और रस-लाघव से वह हल्का बनता है।’

जब सुख की अनुभूति केंद्रित हो जाती है। अपनी सुख-साधना में दूसरों की कठिनाइयों की अनुभूति मिट जाती है, तब वातावरण में दबाव, तनाव और भार की अनुभूति होती है। जब सुख की अनुभूति व्यापक हो जाती है, दूसरों की कठिनाइयाँ बढ़ाने में रस नहीं रहता, तब वातावरण, तनाव और भार की अनुभूति से शून्य हो जाता है। इसीलिए भगवान् महावीर ने कहा था, सुख-गौरव—सुख को अपना मानने से आदमी बोझिल बनता है और सुख-लाघव से आदमी हल्का बनता है।’

सत्य

सत्य बहुत विराट् है। विराट् को शब्दों में बाँधना एक साहसिक प्रयत्न है। आदमी अनंत आकाश को बाँध अपना घर बना लेता है। अनंत में फैली हुई सूरज की रश्मियों को ग्रहण कर उसे आलोकित कर लेता है तब सत्य के अंचल का स्पर्श कर हम क्यों नहीं विराट् विभूति की अनुभूति कर सकते?

आग्रह के लोहावरण को तोड़े बिना क्या कोई सत्य तक पहुँचा है? जिसने अपनी धारणा की खिड़की से सत्य को देखा, वह सत्य से दूर भागा है। जिसने तथ्यों की खिड़की से सत्य को देखने का

प्रयत्न किया, वह सत्य के निकट पहुँचा है।

एक कुलवधू रस्सी से पीपल को बाँधकर खींच रही थी। उसके हाथ रक्त-रंजित हो रहे थे। शरीर काँप रहा था। आँखों से अवरिल आँसू टपक रहे थे। फिर भी हठी पीपल एक पग भी नहीं सरक रहा था। पथिक उधर से आया। उसने सारा दृश्य देखा। वह शांत स्वर से बोला—‘बहन! क्या कर रही है?’

‘भैया! सास ने पीपल मँगाया है, इसलिए इसे घर ले जाने का प्रयत्न कर रही हूँ। पर यह बहुत हठी है। मेरी एक भी बात नहीं मानता।’ कुलवधू ने फिर एक बार रस्सी को दृढ़ता से खींचा किंतु पीपल नहीं चला।

पथिक ने कहा—‘बहन! पीपल ऐसे नहीं जाएगा।’ वह पीपल पर चढ़ा और एक टहनी तोड़ी। उसकी ओर बढ़ते हुए बोला—‘लो! यह पीपल अपनी सास को दे देना।’

आचार्य भिक्षु ने इस कथा द्वारा अज्ञानलब्ध आग्रह का चित्रण किया है। किंतु आग्रह का यह एक रूप ही नहीं होता। अपनेपन का भी आग्रह होता है।

एक आदमी तलैया में बैठा जल पी रहा था। जेठ की गर्मी में उसका जल सूख गया था। थोड़ा-बहुत बचा, वह मिट्टी से मिला हुआ था। एक पथिक उस मार्ग से आया। उसने कहा, ‘थोड़ी दूर पर बड़ा तालाब है, स्वच्छ पानी है। वह पीओ। क्यों पीते हो यह मिट्टी मिला पानी?’

‘यह मेरे पिता की तलैया है, मैं इसी का जल पीऊँगा’—यह कहकर वह जल पीने का प्रयत्न करने लगा।

मोहजनित आग्रह इससे भी भयंकर होता है। धोबी के घर एक कुत्ता रहता था। उसका नाम था सताबा। धोबी के दो पत्नियाँ थीं। वे परस्पर बहुत लड़ती। लड़ते समय एक-दूसरे को गाली देती, ‘आयी है सताबा की बैर (पत्नी)।’ कुत्ता इस नाम के मोह में फँस गया। उन्होंने कुत्ते को रोटी डालना बंद कर दिया। वह भूख से सूख गया। पड़ोस के कुत्ते ने कहा—‘चलो, घूमें और रोटी खाएँ।’ उसने कहा, ‘अपनी दो पत्नियों को छोड़कर बाहर कैसे जा सकता हूँ?’

संस्कार का आग्रह भी किसी से कम नहीं होता। एक चींटी कहीं जा रही थी। बीच में दूसरी चींटी मिल गई। दोनों ने बातचीत की। अतिथि चींटी ने सुख-संवाद पूछा तो वहाँ खड़ी चींटी ने कहा—‘बहन! और तो सब ठीक है पर मुँह खारा बना रहता है।’ अतिथि चींटी ने कहा—‘तुम नमक के पर्वत पर रहती हो, फिर मुँह खारा क्यों नहीं होगा? चलो मेरे पास। मैं मिसरी के पहाड़ पर रहती हूँ। वहाँ तुम्हारा मुँह मीठा हो जाएगा।’ वह अतिथि चींटी के साथ चल पड़ी। वहाँ पहुँचने पर भी उसका मुँह मीठा नहीं हुआ। उसने कहा—‘मेरा मुँह तो अभी खारा ही है।’ वहाँ रहने वाली चींटी ने कहा—‘मुँह में नमक की डली तो नहीं लाई हो?’ ‘वह तो है’, नमक के पहाड़ पर रहने वाली चींटी ने कहा। ‘बहन, नमक को छोड़े बिना मुँह मीठा कैसे होगा?’

पूर्वाग्रहों से मुक्ति पाए बिना कोई भी आदमी सत्य को नहीं पा सकता।

संयम

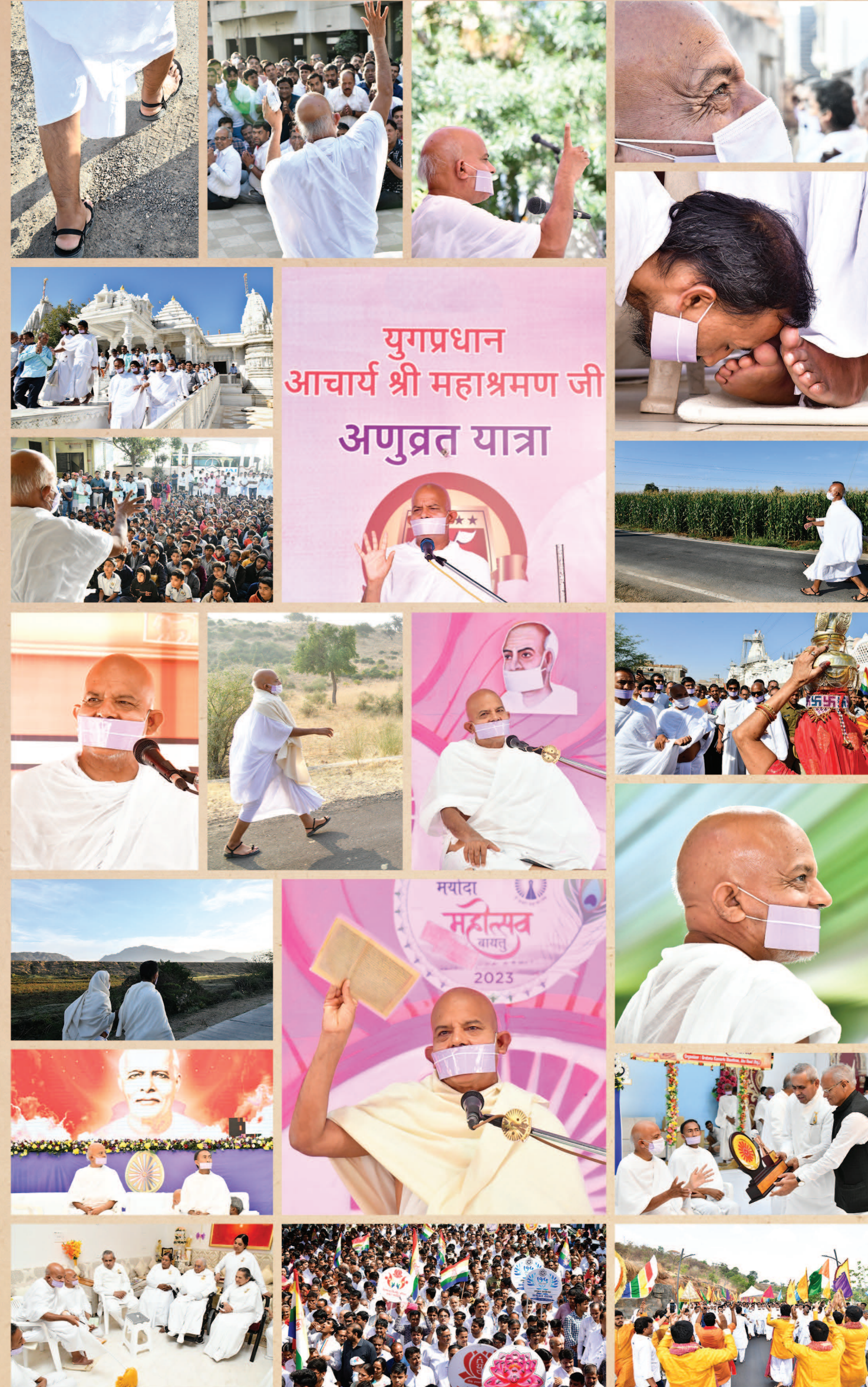
यदि संयम नहीं होता तो दुनिया में भय और आतंक का एकछत्र साम्राज्य होता। यदि नदी तटों के बीच प्रवाहित नहीं होती तो उससे जनता का उपकार कम, अपकार अधिक होता। हमारे जीवन की धारा संयम के तटों के बीच बहती है, इसीलिए हम हैं और समाज के बीच में जीवित हैं। नीचे साबरमती बह रही है, ऊपर रेलवे पुल है। एक ओर बड़ी लाइन है, दूसरी ओर छोटी लाइन है। पास में ही साइकिलों और पद-गामियों का मार्ग है। सब अपने-अपने मार्ग से गुजर रहे हैं। कोई किसी के मार्ग में बाधक नहीं बन रहा है। यदि व्यवस्था में संयम नहीं होता तो नदी के प्रवाह में रेलें रुक जातीं, मनुष्यों का आवागमन रुक जाता। मनुष्य संयम को जानता है, इसलिए न प्रवाह रुकता है, न रेलें रुकती हैं और न आवागमन रुकता है।

कछुआ संयम करना जानता है। अपने अवयवों को अपनी सुरक्षा ढाल में संगोपित करना जानता है। इसीलिए वह सियारों के प्रहार से बच जाता है। भगवान् महावीर और भगवान् बुद्ध ने एक ही भाषा में कहा—‘हाथों का संयम करो, पैरों का संयम करो, वाणीका संयम करो, इंद्रियों का संयम करो और मन का संयम करो।’

हर आदमी अपनी सुरक्षा चाहता है। संयम सबसे बड़ी सुरक्षा है। असंयम से जितने आदमी बीमार होते हैं, उतने कीटाणुओं से नहीं होते। असंयम से जितने आदमी घायल बनते हैं, उतने शस्त्रों से नहीं होते। असंयम से जितने आदमी बंदी बनते हैं, उतने पुलिस से नहीं बनते। असंयम से जितने आदमी मरते हैं, उतने मौत से नहीं मरते।

(क्रमशः)

बढ़ रहे
ज्योति
चरण
लेकर
संदेश
नैतिक
सद्भावित
और
नशामुक्त
हो भारत
देश
नव वर्ष
मंगलमय हो
अभातेयुप परिवार



वर्ष 2024

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29		

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

MAY

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

JULY

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

NOVEMBER

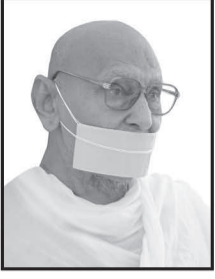
S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				







संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

(पिछला शेष) साधक ध्यान के पूर्व और ध्यान के बाद भावनाओं के अभ्यास का सतत स्मरण करता रहे। उनसे एक शक्ति मिलती है, धीरे-धीरे मन तदनु रूप परिणत होता है। मिथ्या धारणाओं से मुक्त होकर सत्य की दिशा में अनुगमन होता है और एक दिन स्वयं को तथानुरूप प्रत्यक्ष अनुभव हो जाता है। भावना और ध्यान के सहयोग से मंजिल सुसाध्य हो जाती है। साधक इन दोनों की अपेक्षा को गौण न समझे। सभी धर्मों ने भावना का अवलंबन लिया है।

भावनाएँ विविध हो सकती हैं। जिनसे चित्त विशुद्धि होती है तथा अविद्या का उन्मूलन और विद्या की उपलब्धि होती है—ये सब संकल्प और विचार भावनाओं के अंतर्गत हैं। फिर भी संतों ने उनका कुछ वर्गीकरण किया है। उन्हें बारह और चार—इस प्रकार दो भागों में विभक्त किया है।

बारह भावनाएँ

(१) अनित्य भावना—जो कुछ भी दृश्य है, वह सब शाश्वत नहीं है। प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। बुद्ध ने कहा है—‘सब क्षणिक है।’ एक समयसे अधिक कोई नहीं ठहरता। साधक की दृष्टि अगर खुल जाए तो उसे सत्य का दर्शन संसार का प्रत्येक पदार्थ दे सकता है, वही उसका गुरु हो सकता है। एक शिष्य वर्षों तक आचार्य के पास रहा परंतु उसकी दृष्टि नहीं खुली। शिष्य हताश हो गया। गुरु ने कहा—‘अब तू यहाँ से जा, यहाँ नहीं सीख सकेगा।’ वह आश्रम से चला आया। एक पीपल के वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगा। एक पत्ता टूटकर नीचे गिरा और दृष्टि मिल गई। गुरु के पास आया और बोला—घटना घट गई। गुरु ने पूछा—कैसे? वृक्ष के नीचे बैठा था। पत्ता गिरा और अचानक मुझे स्मरण हो आया कि मुझे भी मरना-गिरना है। गुरु ने कहा—‘बस, उसे ही नमस्कार करना था, वही तेरा गुरु है।’

भरत चक्रवर्ती अपने कांच-महल में सिंहासन स्थित शरीर का अवलोकन कर रहे थे। अचानक उन्हें शरीर के परिवर्तन का बोध हुआ। यह वह शरीर है जो बचपन में था और अब जवानी में है, कितना बदल गया। सब कुछ परिवर्तन हो रहा है, किंतु इस परिवर्तन के पीछे जो एक अपरिवर्तनीय सत्ता है, वह जैसे पहले थी अब भी वैसी ही है और आगे भी वैसी ही रहेगी। दृष्टि उपलब्ध हो गई। एक के अनित्य का दर्शन सबका दर्शन है। जैसे यह शरीर बदल रहा है वैसे ही संपूर्ण पुद्गलों का परिवर्तन चल रहा है वे संबोधि-केवलज्ञान को उपलब्ध हो गए।

कारलाइल के जीवन में भी ऐसी ही घटना घटी। वह अस्सी वर्ष की अवस्था पार कर चुका था। अनेक बार बाथरूम में गया था। किंतु जो घटना उस दिन घटी, वह कभी नहीं घटी। स्नान के बाद शरीर को पोछते-पोछते देखता है। वह शरीर कितना बदल गया। जीर्ण हो गया। किंतु भीतर जो जानने और देखने वाला है वह जीर्ण नहीं हुआ, वह वैसा ही है। परिवर्तनीय के साथ अपरिवर्तनीय की झाँकी मिल गई।

वैज्ञानिक कहते हैं, सात साल में पूरा शरीर बदल जाता है! सत्तर वर्ष की अवस्था में दश बार सब कुछ नया उत्पन्न हो जाता है। लेकिन इस परिवर्तन की ओर दृष्टि बहुत कम जाती है। साधक के पास सबसे निकट शरीर है। और भी जड़-चेतन जगत् जो निकट है, वह उसे एक विशिष्ट दृष्टि से देखे और अनुभव करे कि यह जगत् उसके लिए एक बड़ी प्रशिक्षण शाला है जो निरंतर प्रशिक्षण दे रही है। अनित्य भावना में क्षण-क्षण बदलते हुए इस जगत् को और स्वयं के निकट जो है उसका दर्शन करे। केवल संकल्प न दोहराए कि सब कुछ अनित्य है, अनित्य है, किंतु उसका अनुभव करे और उसके साथ अंतःस्थित अपरिवर्तनीय आत्मा की झलक भी पाएँ।

(२) अशरण भावना—यह भावना हमारे उस संस्कारों पर प्रहार करती है जो बाहर का सहारा ताकते हैं। यदि मनुष्य की समझ में यह तथ्य आ जाए कि अंततः मेरा कोई शरण नहीं है, तब सहज ही बाह्य वस्तु-जगत् की पकड़ ढीली हो जाए। अन्यथा आदमी धन, परिवर्तन, स्त्री, पुत्र, मित्र, मकान आदि सबको पकड़ता है। वह समझता है कि अंत में कोई न कोई मुझे अवलंबन देगा। यह भ्रम ही संग्रह का हेतु बनता है। धर्म कहता है—‘कोई त्राण नहीं है। छोड़ो अपनी पकड़। क्यों व्यर्थ ममत्व, मोह और पाप का संग्रह करते हो। बस, सिर्फ पकड़ छोड़ दो। जीवन से भागने की जरूरत नहीं। वाल्मीकि ने जब जाना तब एक क्षण में उससे मुक्त हो गया। अनाथी मुनि ने जब देखा—कोई मुझे रोग से मुक्त नहीं कर

पा रहा है। सब असफल हो गए। तब दृष्टि भीतर की तरफ मुड़ी और देखा—जो है, रोग उससे दूर है, मृत्यु दूर है, सब कुछ दूर है तो क्यों नहीं उसे ही अपना शरण बनाऊँ। वह उसकी खोज में चला गया। सम्राट् श्रेणिक ने कहा—‘मैं तुम्हारा मालिक बनूँगा।’ अनाथी मुनि ने कहा—‘तुम मेरे मालिक क्या बनोगे? पहले अपने खुद के मालिक बनो। अभी जिनके मालिक हो उनके गुलाम भी हो। मैंने खोजा, वह अपने भीतर है। जिस दिन तुम भी खोज लोगे, मालिकियत टूट जाएगी और एक नई मालिकियत का जन्म होगा।’

डेनमार्क के एक विचारक ने लिखा है—‘असली चिंता तो तब पकड़ती है जब तुम्हें लगता है कि पैर के नीचे से जमीन खिसक गई।’ यही एक ऐसा क्षण है जो भविष्य का फैसला करता है। किंतु यदि इसके पूर्व में सच्चाई का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं किया हुआ हो तो प्रायः व्यक्ति भविष्य को अंधकारपूर्ण बना लेते हैं। वे मरते क्षण में शरीर को छोड़ रहे हैं किंतु वासना को नहीं। वासना अपने ही लोगों और वस्तुओं के आसपास चील की तरह मंडराती रह जाती है, और प्राणी मरकर पुरः उनके ही इर्द-गिर्द पैदा हो जाता है। महावीर, बुद्ध आदि ने कहा है—‘अपनी ही शरण जाओ।’ धम्मं सरणं पवज्जामि-स्वभाव की शरण खोजो।’ साधक बाहर से अत्राण को देखे और भीतर देखे जो है उसे। वह सदा है, उसी को पकड़ने से त्राण पाया जा सकता है। उसकी स्मृति एक क्षण भी विस्मृत न हो। यह सुरति-स्मृति योग है। गुरु नानक ने कहा है, जो उसे नहीं भूलता, वही वस्तुतः महान् है। वह सच्ची संपत्ति है जो हमारे साथ जा सकती है।

(३) भव-भावना—आज के वैज्ञानिक भी इसे स्वीकार करते हैं कि विश्व में पदार्थ सर्वथा नष्ट नहीं होते, केवल परिवर्तन होता रहता है। धार्मिक सदा से ही यह कहते आए हैं कि जीव और अजीव, चेतन और जड़—ये दो स्वतंत्र द्रव्य हैं। यह संपूर्ण विश्व इन दोनों की सृष्टि है। ये दोनों अनादि हैं। आत्मा विजातीय तत्त्व से सर्वथा मुक्त नहीं होता, तब तक उसे संसार में भ्रमण करना होता है। भव-भावना में साधक यह देखता है, अनुभव करता है कि मैं इस संसार में कब से भ्रमण कर रहा हूँ। ऐसी कोई योनि नहीं है जहाँ मैं जन्मा नहीं हूँ। प्रत्येक गति में अनेकशः उत्पन्न हो चुका हूँ। क्या मैं इस प्रकार भ्रमण करता रहूँगा? वह देखता है योनियों में विविध कष्टों को और इस भव-भ्रमण के बंधन को चाहता है तोड़ना। राग और द्वेष भव-भ्रमण के मुख्य हेतु हैं। जब तक वे विद्यमान रहते हैं तब तक आत्मा का पूर्ण स्वातंत्र्य प्रगट नहीं होता। विविध योनियों के विविध रूपों में भ्रमण का चिंतन करना भव-भावना है।

(४) एकत्व भावना—

एगो से सासओ अप्पा, पाणदंसण लक्खणो।
सेसो मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा।

ज्ञान-दर्शन स्वरूप शाश्वत आत्मा है, यही मैं हूँ। इसके सिवा शेष सांयोगिक पदार्थ मेरे से भिन्न हैं, वे ‘मैं नहीं हूँ।’ दूसरों के साथ अपने को इतना संयुक्त न करे कि जिससे स्वयं के होने का पता ही न चले। इस एकत्व भावना में अपने को समस्त संयोगों से पृथक् देखता है। प्लोटिस ने कहा है—Flight of the Alone to the Alone : ‘अकेले ही अकेले के लिए उड़ान है।’ नमि राजर्षि ने कहा—‘संयोग ही दुःख है। दो में शब्द होते हैं, अकेले में नहीं। रानियाँ चंदन घिस रही थीं। चूड़ियों के शब्द कानों में चुभ रहे थे। नमि राजर्षि ने कहा—बंद करो। रानियाँ हाथ में एक-एक चूड़ी रख चंदन घिसने लगीं। शब्द बंद हो गया। नमि राजर्षि ने पूछा—क्या चंदन घिसना बंद कर दिया? उत्तर मिला—‘नहीं, घिसा जा रहा है।’ तो शब्द क्यों नहीं हो रहा है, नमि ने पूछा। तब कहा—‘एक-एक चूड़ी है। एक चूड़ी कभी शब्द नहीं करती।’ तत्क्षण यह सुनते ही वे प्रतिबुद्ध हो गए। और साधना-पथ पर चल पड़े। साधक सर्वत्र स्वयं के अकेले का अनुभव करे। यह सिर्फ कल्पना के स्तर पर ही नहीं, वस्तुतः जो है—अस्तित्व वह एक है, अकेला है। जिस दिन चैतन्य की अनुभूति में निमज्जन होने लगता है, शांति उस दिन स्वयं ही उसके द्वार खटखटाने लगती है।

(५) अन्यत्व भावना—एकत्व और अन्यत्व—दोनों परस्पर संबंधित हैं। अन्य—दूसरों से स्वयं को पृथक् देखना एकत्व है और अपने से दूसरों को भिन्न देखना अन्यत्व है। ‘पर’ ‘पर’ है पर ‘स्व’ ‘स्व’ है। ‘पर’ को अपना न माने। ‘पर’ के और अपने बीच जो दूरी है, वह सदा बनी रहती है। किसी ने एक होटल के मालिक से पूछा—‘वह व्यक्ति ठीक आप जैसे लगता है, क्या आप भाई-भाई हैं?’ एक ही हैं आप?’ उसने कहा—‘नहीं’, बहुत दूरी है। हम अपने पिताजी के बारह लड़के हैं। पहला मैं हूँ और वह बारहवाँ है।

भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक समारोह

हम अपनी संस्कृति व संस्कारों के पहरेदार बनें

दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी एवं समणी डॉ० ज्योतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में दिल्ली सभा एवं अणुव्रत न्यास के तत्वावधान में भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक समारोह का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद लहरसिंह सिरिया मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि स्वदेश भूषण तथा मुख्य वक्ता जैन महासभा के महासचिव प्रो० रतन जैन की उपस्थिति रही। श्वेतांबर तेरापंथी, मंदिरमार्गी, स्थानकवासी एवं दिगंबर चारों समाज के गणमान्य व्यक्तियों की विशिष्ट उपस्थिति रही।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर का जीवन अध्यात्म की साधना का उत्तुंग शिखर है। आज ही के दिन उन्होंने संयम-साधना का प्रारंभ सिद्धि के संकल्प के साथ किया। संयम की साधना जीवन जीने की आध्यात्मिक कला है। यही संयम साधना हमें स्वस्थ, संतुलित, ऊर्जावान और दिव्य चेतना का संवाहक बनाती है। हम सौभाग्यशाली हैं

कि हमें जैन संस्कृति में पल्लवित एवं पुष्पित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि आज हमारे संस्कारों का हास हो रहा है। खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, चाल-चलन बदलते नजर आ रहे हैं। हमें अपनी संस्कृति का संवर्धन व पोषण करना है। शादी गृहस्थ जीवन का पवित्र संस्कार है। आज भारत से बाहर जाकर शादी करने का प्रचलन बढ़ रहा है। शादी जैसे पवित्र संस्कार अपनी धरती पर अपने आकाश की साक्षी में होने चाहिए। साध्वीश्री जी के इस आह्वान पर सैकड़ों व्यक्तियों ने विदेश जाकर शादी न करने एवं विदेश में होने वाली शादी में शामिल न होने का संकल्प लिया।

राज्यसभा सांसद लहरसिंह सिरिया ने कहा कि भगवान महावीर ने अहिंसा, सत्य, संयम का सिद्धांत दिया। यह महावीर वाणी अगर जन-जन के जीवन में उतर गई तो जीवन धन्य बन जाएगा। मुख्य वक्ता प्रो० रतन जैन ने कहा कि

आज हम महावीर के सिद्धांतों की तो चर्चा कर रहे हैं किंतु उन सिद्धांतों को अमलीजामा नहीं पहना पा रहे हैं। जब तक जीवन में नहीं उतारेंगे तब तक रूपांतरण घटित नहीं होगा।

डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने कहा कि भगवान महावीर का संयम अनुत्तर था। उन्होंने आहार संयम की साधना की। निद्रा विजय की साधना की। आज हम एक संकल्प अवश्य करें कि हम दिन में चार बार से ज्यादा नहीं खाएंगे।

साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी मैत्रीप्रभा जी एवं साध्वी समत्वयशा जी ने अपने भावों की प्रस्तुति वक्तव्य व गीत के माध्यम से दी। डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने मंच संचालन किया।

दिगंबर समाज से स्वदेश भूषण, महावीर मेमोरियल के उपाध्यक्ष संपत नाहटा, मंत्री विपिन जैन, अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के०सी० जैन ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का प्राक् संचालन दिल्ली सभा के मंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

महिला मंडल के विविध आयोजन

अमराईवाड़ी

अभातेमम के तत्वावधान में तेममं द्वारा तेरापंथ भवन में दिवाली स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका मंजू गेलड़ा ने नवकार महामंत्र के द्वारा की। तेममं की बहनों ने सुमधुर प्रेरणा गीत का संगान किया। कार्यक्रम में निर्णायक के रूप में उपासिका मंजू, रेखा चिप्पड़ एवं डॉक्टर रिचि खाब्बा उपस्थित थे। कार्यक्रम को तीन सत्र में विभाजित किया गया। बेस्ट प्रांतीय वेशभूषा प्रतियोगिता, बेस्ट मिलेट्स प्रतियोगिता, बेस्ट सुझाव प्रतियोगिता। अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, निर्णायक एवं उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया।

उपासिका मंजू गेलड़ा ने कहा कि आज के फास्ट फूड और इंस्टेंट फूड की अपेक्षा मिलेट्स से बना भोजन हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। साथ ही कार्यक्रम में प्रांतीय वेशभूषा प्रतियोगिता का आयोजन किया है। इस प्रतियोगिता के माध्यम से बहनों को यह संदेश देने की कोशिश की कि भारत में सभी जाति के लोग अलग-अलग होने पर भी एकजुट रहते हैं, हमारी वेशभूषा बहुत ही सुंदर है और हमें अपनी वेशभूषा और अपनी संस्कृति का आदर करना चाहिए। वक्तव्य

प्रतियोगिता में बहनों द्वारा वह कैसे मंडल में योगदान देकर और रोशन कर सकती हैं पर अपने विचार रखे गए। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ० रिचि खाब्बा ने टिप्स के माध्यम से बताया कि हम खुद को और अपने परिवार को कैसे हैल्थी और फिट रख सकते हैं। मिलेट्स मैजिक प्रतियोगिता में २० बहनों ने भाग लिया और ४० बहनों ने प्रांतीय वेशभूषा में भाग लिया।

‘कैसे नव युवतियाँ करें अपने मंडल को और रोशन’ विषय पर रेखा चिप्पड़ ने अपने विचार रखे। स्पीच प्रतियोगिता में बहनों ने दिए गए विषय पर अपने नए-नए विचार रखे। तीनों प्रतियोगिता में विजेता घोषित किए गए। मंच का संचालन मंत्री वंदना पगारिया ने किया। आभार ज्ञापन आरती दुगड़ द्वारा किया गया।

ईरोड

अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं, ईरोड द्वारा साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में ‘माँ का दिशाबोध, बेटी की उड़ान’ कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला दो चरण में रखी गई, जिसमें पहले चरण में माताओं को एवं दूसरे चरण में माँ और बेटी दोनों को जोड़ा गया।

पहला चरण-कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ हुई।

बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के माध्यम से मंगलाचरण कर, महिला मंडल की अध्यक्षा पिंकी भंसाली के स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम को गति प्रदान की। साध्वी मयंकप्रभा जी ने छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से ‘माँ बेटी का रिश्ता कैसा होता है’ समझाया। संस्कारों की पौध इस तरह से वपन करें कि बेटियों का जीवन एक वटवृक्ष का रूप ले सके। साध्वी मेरुप्रभा जी व साध्वी दक्षप्रभा जी के ‘माँ एवं परिवार’ की गीतिका से पूरा भवन मंत्रमुग्ध हो गया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने बताया कि किस प्रकार संस्कारों का सही निर्माण बेटियों को सही दिशा दे सकता है। बदलते हार्मोस की वजह से रिश्ते में एक दूरी होने लगती है, जिसे अगर हम सही समय पर पहचान सकें तो हम रिश्तों को अटूट विश्वास में बाँध सकते हैं।

दूसरा चरण-दूसरे चरण में माँ और बेटी दोनों को प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें गेम्स के द्वारा उनके सुंदर रिश्ते को और मजबूत बनाया गया। प्रश्नों के साथ अपनी गलतियों को जाना और एक-दूसरे से माफी माँगकर गले से लगाया। दो विजेता जोड़ियों को सम्मानित किया गया। संचालन पूनम दुगड़ के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में ४२ बहनों एवं ८ बेटियों ने भाग लिया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

उधना।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा बाइमेर, सूरत प्रवासी सोहनलाल, नरेश, दिलीप चोपड़ा के व्यावसायिक प्रतिष्ठान महोत्सव ग्रुप की २३वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में मानवता को समर्पित रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान शिविर का प्रारंभ तेयुप, उधना के उपस्थित कार्यकर्ता, महोत्सव ग्रुप के नरेश चोपड़ा एवं सभी सदस्यगण तथा ब्लड बैंक के सदस्यों द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामुहिक मंत्रोच्चार से हुआ। रक्तदान शिविर में स्मीमेर ब्लड बैंक ने सहयोगी ब्लड बैंक के रूप में अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। लगभग ४० दाताओं ने अपनी स्वेच्छा जाहिर की, जिसमें से २६ दाताओं का रक्तदान स्वीकार किया गया।

अंत में अध्यक्ष हेमंत डांगी, उपाध्यक्ष गौतम आंचलिया, विनोद सिसोदिया, मंत्री विकास कोठारी, कोषाध्यक्ष भगवती लाल हिरण, संगठन मंत्री प्रकाश श्रीमाल, एमबीडीडी प्रभारी शैलेश बाफना, एटीडीसी पांडेसरा प्रभारी कमलेश बाफना ने नरेश चोपड़ा का सम्मान कर धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन मंत्री विकास कोठारी ने किया।

प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम का आयोजन

अहमदाबाद।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में प्रेक्षावाहिनी शाहीबाग-अहमदाबाद व तेरापंथ सेवा समाज के संयुक्त प्रयास से तेरापंथ भवन में प्रेक्षाध्यान के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने मंगलपाठ से कार्यक्रम की शुरुआत की।

प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने कहा कि प्रेक्षाध्यान प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का मानव जाति के लिए महान अवदान है, जो आधि, व्याधि व उपाधि से मुक्ति का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रेक्षाध्यान हमारे जीवन की प्रयोगशाला बने। जवेरीलाल संकलेचा ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया।

त्रिपदी वंदना व प्रेक्षा गीत प्रेक्षा प्रशिक्षक धर्मेन्द्र कोठारी ने किया। तेरापंथ सेवा समाज के प्रधान ट्रस्टी सज्जनराज सिंघवी ने स्वागत करते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान चित्त समाधि का उत्तम प्रयोग है। धनराज छाजेड़ ने दीर्घश्वास हेतु सम्यक् प्रयोग करवाए। तेरापंथ सेवा समाज के अध्यक्ष नानालाल कोठारी ने मंगलभावना का प्रयोग करवाया। आभार ज्ञापन प्रेक्षा प्रशिक्षक सुषमा मरोठी ने किया। कार्यक्रम का संयोजन जवेरीलाल संकलेचा ने किया। कार्यक्रम में लगभग २७ साधक-साधिकाओं ने भाग लिया।

भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव वर्ष पर कार्यक्रम का आयोजन

बीदासर।

समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में भगवान महावीर के २५५०वें निर्वाण महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि जैन कौन है? जो राग-द्वेष को जीतकर धर्म की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं, उस धर्म को अपनाने वाले जैन कहलाते हैं। अंग्रेजी में जैन शब्द ४ अक्षरों से बनता है। इन चार अक्षरों में जैन की परिभाषा दी गई है। पहला अक्षर-जे फोर जस्टिस यानी न्याय। ए फोर एफेक्शन यानी प्रेम भाव। आई फोर इंट्रोस्पेक्शन यानी गहन आध्यात्मिक रुचि। एन फोर नोवल्टी यानी मन दया के भाव से भीगा रहे। जैनियों की एक मुख्य पहचान है वह रात्रि भोजन नहीं करते, शुद्ध शकाहार भोजन करते हैं और नशे से कोसों दूर रहते हैं। यह मुख्य पहचान आज धूमिल सी हो रही है। उपस्थित सभा को संबोधित करते हुए साध्वीश्री जी ने जैनत्व की पहचान को बनाए रखने की प्रेरणा दी।

जैन नियम आध्यात्मिक महत्त्व रखते हैं। आज का व्यक्ति इसे १६वीं शताब्दी की बात कहता है, लेकिन २५५० वर्ष पूर्व भगवान महावीर द्वारा उपदिष्ट ये नियम आज के वैज्ञानिक उपयोगिता को भी सिद्ध करते हैं। जिस प्रकार अन्य मतावलंबी अपने धार्मिक नियमों का आज भी पालन करते हैं, वैसे ही जैनी भी अपनी पहचान उजागर करने वाले इन नियमों के प्रति जागरूक बनें।

साध्वीश्री जी ने श्रावक-श्राविकाओं को ‘लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते’ इस आर्ष वाणी के जप की प्रेरणा दी। साध्वी जागृतयशा जी ने भगवान महावीर पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित ‘जय महावीर भगवान’ गीत से हुआ। साध्वीश्री जी ने इस वर्ष भगवान महावीर, श्रमण महावीर एवं पुरुषोत्तम महावीर पुस्तक के स्वाध्याय की प्रेरणा भी प्रदान की।

आराध्य के प्रति हो भक्ति का भाव : आचार्यश्री महाश्रमण



सायन कोलीवाड़ा,
२३ दिसंबर, २०२३

सायन कोलीवाड़ा प्रवास के दूसरे

दिन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जगत् में चौबीस तीर्थकरों

को नमस्कार किया जाता है। अर्हत मनुष्य जगत में उच्च व्यक्तित्व होते हैं। आध्यात्मिक जगत में उनसे बड़ा व्यक्ति

मिलना मुश्किल या असंभव प्रतीत हो रहा है। अध्यात्म के वे अधिकृत प्रवक्ता होते हैं। तीर्थकर अनंत ज्ञान के धारक होते हैं, अतिशय संपन्न होते हैं।

जैन शासन में नवकार मंत्र अत्यधिक प्रसिद्ध है। यह एक भक्ति का प्रयोग है। नमन कर लेना भक्ति का उदाहरण है। किसी के पैर में मस्तक लगाना तो कितनी बड़ी भक्ति हो सकती है। अपने आराध्य के प्रति भक्ति का भाव होना चाहिए। तीर्थकर नाम गौत्र का बंध भी भक्ति से हो सकता है।

किसी व्यक्ति, सिद्धांत या आदर्श के प्रति भक्ति या समर्पण का भाव हो सकता है। अध्यात्म में हमारी आत्मा के प्रति, जिनवाणी के प्रति सच्चाई के प्रति भक्ति हो। ज्ञानशाला से बच्चों में ऐसे अच्छे संस्कार आ सकते हैं। बच्चों में संस्कारों की संपदा हो, ज्ञानार्थी बच्चों में प्रशिक्षण देने वाले तत्त्वज्ञान का भी बोध

कराएँ। बच्चे अच्छे होते हैं, तो समाज-राष्ट्र का भविष्य अच्छा हो सकता है।

पूज्यप्रवर ने ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों से प्रवचन के दौरान सुनाई गई कथा सुनाने को कहा, जिसे ज्ञानार्थियों ने अपनी शैली में प्रस्तुत किया। धूलिया में चातुर्मास कर पहुँची साध्वी सिद्धप्रभा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। सहवर्ती साध्वियों ने गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अभिव्यक्ति दी। स्थानीय सभा की ओर से अशोक धाकड़, तेयुप, सभा द्वारा संयुक्त रूप से गीत प्रस्तुत किया गया। महिला मंडल, स्कूल की छात्राओं एवं कन्या मंडल ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

'बुल्स रन किशोर फन' कार्यक्रम का आयोजन

कालबादेवी।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, दक्षिण मुंबई के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल, दक्षिण मुंबई ने 'बुल्स रन किशोर फन' का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुनि योगेश कुमार जी, मुनि जयेश कुमार जी और मुनि सत्यकुमार जी का सान्निध्य प्रदान किया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनि योगेश कुमार जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। नमस्कार महामंत्र के बाद हरियाणा किशोर मंडल से गौतम सिंघी ने कार्यक्रम में अपनी बांसुरी की धुन से मधुरिम रस बिखेरा मुनि जयेश कुमार जी ने 'Soul and Body' पर चर्चा की। मुनि योगेश कुमार जी ने किशोरों को धर्म और फाइनेंस के बारे में अवगत कराया।

कार्यक्रम में एडवोकेट जनरल ऑफ महाराष्ट्र एंड गोवा डॉ० बीरेंद्र सराफ ने जिंदगी में सफलता के सूत्र समझाए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बी०सी० भालावत ने स्टॉक मार्केट एवं उसमें नए अवसरों के बारे में जानकारी दी। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने किशोरों को सेवा कराने की कृपा कराई। प्रवचन पंडाल में आयोजित 'बुल्स रन किशोर फन' में किशोरों को नियमों से अवगत कराकर खेल की शुरुआत की, जिसमें किशोरों ने स्टॉक मार्केट की लाइव ट्रेडिंग का स्वाद चखा।

कार्यक्रम में तेयुप, दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष नितेश धाकड़, मंत्री रोनक धाकड़, तेरापंथ किशोर मंडल, दक्षिण मुंबई के प्रभारी दर्शन डागलिया एवं तेरापंथ किशोर मंडल, दक्षिण मुंबई की संपूर्ण टीम उपस्थित थी।

भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन

पूर्वाचल-कोलकाता।

आचार्य भिक्षु की स्तुति में तेयुप, पूर्वाचल-कोलकाता अपनी भजन मंडली पूर्वाचल स्वर लहरी के साथ आचार्य भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन तेयुप के मंत्री सुरेंद्र सिद्धार्थ दुधेड़िया के निवास स्थान पर किया। पूर्वाचल स्वर लहरी के गायकों द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम शुरु हुआ। तेयुप के गायक मनोज चिंडालिया, धीरज मालू, राजीव खटेड़ एवं किशोर मंडल से अर्पित मालू ने आचार्य भिक्षु को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

कार्यक्रम में तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष राजीव खटेड़, अध्यक्ष संदीप सेठिया, मंत्री सिद्धार्थ दुधेड़िया, उपाध्यक्ष-प्रथम धनपत बरड़िया, सहमंत्री-प्रथम यशवर्धन श्यामसुखा, सहमंत्री-द्वितीय लोकेश दुगड़ सहित ६० से अधिक लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन धीरज मालू ने किया।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

पूर्वाचल-कोलकाता।

तेयुप एवं किशोर मंडल ने साथ मिलकर सेवा कार्य हेतु महावीर सेवा सदन में ४० विकलांग जरूरतमंद लोगों को कृत्रिम अंग का दान किया। संस्थान के संचालक ने कहा कि तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल, पूर्वाचल-कोलकाता ने इस विकलांग जरूरतमंद लोगों को कृत्रिम अंग प्रदान कर इनके जीवन में एक नई शक्ति प्रदान की है, जिसके द्वारा ये सब अपने जीवन में आत्म-सम्मान के साथ आगे बढ़ेंगे। संचालक ने तेयुप के प्रति आभार प्रकट किया एवं तेयुप के उज्वल भविष्य की मंगलकामना की।

कार्यक्रम में अध्यक्ष संदीप सेठिया, सहमंत्री-प्रथम एवं सेवा कार्य प्रभारी यशवर्धन श्यामसुखा, सहमंत्री-द्वितीय लोकेश दुगड़, कोषाध्यक्ष हर्ष सिर्रोहिया, किशोर मंडल से सह-संयोजक हार्दिक सिंघी, हिमेश सिंघी, हितांशु चपलोट एवं उत्कर्ष मालू ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

अपनी शक्ति से हो स्व एवं पर का..

(पृष्ठ ८ का शेष)

संत-सज्जन विभूतियाँ परोपकार के लिए होती हैं। जीवन मिला है तो हम दूसरों के कल्याण के लिए क्या करते हैं? बुद्धि से गलत काम किए जा सकते हैं, तो अच्छे कामों में भी बुद्धि को लगाया जा सकता है।

आचार्य भिक्षु हमारे धर्मसंध के आद्य प्रवर्तक थे, उन्होंने कहा है कि बुद्धि वो ही सराहने लायक है, जो जिन धर्म का सेवन करे। वह बुद्धि किस काम की जो पड़ी-पड़ी पाप-कर्म का बंध करे। बुद्धि तो अपने आपमें क्षयोपशम भाव है, पर उसका उपयोग अच्छा या खराब हो सकता है।

दुनिया में बलवान का महत्त्व है। शरीर में शक्ति है, तभी वीर्य प्रकट होता है। शक्ति होने पर भी जो क्षमा भाव रखता है, वह बड़ा होता है। आलोचना का जवाब अच्छे कार्यों से दो। हम शक्ति के द्वारा स्वयं का भी कल्याण करें और दूसरों का भी भला करने का प्रयास करें।

वीर्य लब्धि का उपयोग किसमें करना चाहिए, यह आदमी में विवेक रहे। गुरुदेव तुलसी ने संघर्षों-विरोधों में भी मनोबल रखा था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपनी शक्ति का ज्ञान बढ़ाने और ज्ञान बाँटने में उपयोग किया था।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि चंदन और चंद्रमा की उपमा साधु-सज्जन व्यक्ति को जा सकती है। साधु की संगति सबसे शीतल होती है। इस शीतलता को प्राप्त करने के लिए लोग पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचते हैं। शीतलता महापुरुष ही प्रदान कर सकते हैं। पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचकर लोग धन्यता का अनुभव करते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेयुप से हिम्मत सोलंकी, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ सभा, मुंबई के कार्यध्यक्ष नवरत्नमल गन्ना एवं अन्य कई श्रावक-श्राविकाओं ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

♦ चौबीस घंटे में दो घंटे का समय भी अगर शुभ योग में बोते तो इसे एक उपलब्धि मानना चाहिए।

— आचार्यश्री महाश्रमण

कषाय, लोभ एवं अहंकार से हो युद्ध : आचार्यश्री महाश्रमण

कुर्ला वेस्ट, २४ दिसंबर, २०२३

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी आज विहार कर कुर्ला पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आत्मा व आदमी को सुख कैसे प्राप्त हो सकता है, यह एक अति महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। सभी प्राणी सुखी रहना चाहते हैं। शास्त्रकार ने इस संदर्भ में युद्ध की बात बताई है कि युद्ध करो।

दुनिया में कई देशों में युद्ध-संघर्ष होता रहता है। ये बाह्य युद्ध है। शास्त्रों में आत्म युद्ध की बात की गई है कि अपनी आत्मा के साथ ही युद्ध करो। अपने आपसे लड़ो। लड़कर विजय प्राप्त करो। अपने से अपने को जीतकर आदमी विजय हासिल कर लेता है। इससे सुख, शांति और भीतरी आनंद की प्राप्ति हो सकती है। एक घर का युद्ध हो जाता है, पर आत्मयुद्ध धर्मयुद्ध है।

जैन वाङ्मय में आठ आत्माएँ बताई गई हैं। अशुभ योग को जीतने का प्रयास शुभ योग आत्मा, चारित्र आत्मा, सम्यक् ज्ञान, चारित्र से युक्त आत्मा, कषाय, लोभ, अहंकार से युद्ध कर विजय प्राप्त



कर सकते हैं। कषाय, मिथ्या दर्शन व शुभ योग को जीतने का प्रयास होना चाहिए। यह आत्मा के साथ आत्मा का युद्ध धर्म युद्ध कहलाता है।

आठ कर्म बताए गए हैं, हमें मोहनीय कर्म के उदय को क्षीण करना है। घाती कर्म रूपी शत्रुओं का नाश करना

है। इस धर्म युद्ध में क्षमा, शांति और संयम हो। यह अध्यात्म जगत का युद्ध है। गुस्से को उपशम के द्वारा, मार्दव के द्वारा अहंकार को, माया को, लोभ को आर्जव के द्वारा, संतोष के द्वारा क्षीण करने का प्रयास करें। ये विकृति रूप में हैं, इनको जीतने का प्रयास करें।

हमारे तीर्थंकरों ने मानो युद्ध किया था। भगवान महावीर का तो लगभग साढ़े बारह वर्षों तक आत्मयुद्ध चलता रहा। ऐसे महापुरुष के हम अनुयायी हैं। हमें अध्यात्म का मार्ग मिला है। जैन-अजैन कोई हो उसने कषाय का नाश कर दिया उसे केवलज्ञान-मोक्ष की प्राप्ति हो सकती

है। बड़ा-छोटा कोई हो कषाय मुक्ति ही बड़ी मुक्ति है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि पूज्यप्रवर ने जब से संन्यास लिया है, तब से पद-यात्रा कर रहे हैं। ये बाह्य जगत की यात्रा है। आचार्यप्रवर बाह्य जगत की यात्रा के साथ अंतर्जगत की यात्रा भी करते हैं। आचार्यप्रवर ने साधना के द्वारा अपनी शक्ति को जागृत किया है। साधना से शक्ति को जागृत करने वाला कभी परास्त नहीं हो सकता।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष कांतिलाल कोठारी, सतीश मेहता ने अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ समाज, कुर्ला द्वारा अभिनंदन गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की गई। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों द्वारा महाश्रमण जीवन झोंकी प्रस्तुत की गई। ज्ञानार्थियों ने ग्यारह संकल्प की शृंखला पूज्यप्रवर को अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अपनी शक्ति से हो स्व एवं पर का कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण



सायन-वड़ाला, २२ दिसंबर, २०२३

अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल से विहार कर अनेक क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए सायन-कोलीवाड़ा क्षेत्र में पधारे। युगप्रधान, महातपस्वी ने मंगल अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में शक्ति का बहुत महत्त्व होता है। जो व्यक्ति अशक्त-निर्बल-कमजोर होता है, वह एक प्रकार से अभिशापित होता है।

जीवन में शक्तिशाली होना अच्छे भाग्य की बात होती है। हमारे जीवन में अनेक प्रकार के बल हो सकते हैं, जैसे-तन बल, मनोबल और वचन बल। गृहस्थ जीवन में चौथा बल है-धन बल। पाँचवाँ बल है-बुद्धि बल। ये बल आदमी के पास हैं तो आदमी बलवान होता है।

शक्ति का उपयोग कल्याणकारी कार्यों में हो, उसका दुरुपयोग न हो। दुर्जन आदमी के पास विद्या है, तो वह उसका विवाद में उपयोग करता है। सज्जन आदमी के पास बुद्धि है तो वह दूसरों को ज्ञान देता है। ज्ञान का विकास करता है। वही बात धन की है। दुर्जन का धन अहंकार का कारण बनता है। सज्जन आदमी धन का दान करता है। दुर्जन ताकत का दूसरों को दुःख देने में उपयोग करता है। सज्जन के पास शक्ति है तो वह दूसरों की सहायता करता है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

